भारतीय समाज में महिला की सामाजिक परिस्थिति एवं भूमिका–एक विश्लेषण

मुकेश यादव

भारत में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक प्रास्थिति और भूमिकाएँ एक विरोधाभासी स्थिति को प्रस्तुत करती है। भारतीय समाज में हम पाते है कि एक तरफ महिलाओं को देवी के रूप में देखा जाता है और दूसरी तरफ समाज में सारी बुराईयों का कारण इन्ही को माना जाता है। भारतीय समाज हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, जैन, सिक्ख, पारसी और अन्य धर्मो से मिलकर बना है। इनकी पृथक–पृथक, परम्पराएँ और रीतिरिवाज हैं। विवाह और परिवार दो मुख्य ऐसी अवधारणाएँ हैं जो स्त्रियों से संबंध रखती है।

भारतीय नारियों की भूमिकाओं के बारे में अनेक ऐतिहासिक और समाज– शास्त्रीय अध्ययन वैदिक काल से आज तक मिलते हैं। वे अध्ययन स्त्रियों की सामाजिक स्थितियों के बारे में परम्परागत दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। साथ ही साथ हाल के अध्ययनों में आधुनिक विचारधाराओं का समावेश है भारतीय समाज में तो परिवर्तन आ रहे हैं उसमें जन्म के आधार पर व्यक्ति को सामाजिक परिस्थिति प्रदान की जाती थी जबकि अब योग्यता के आधार पर अर्जित की जा रही है।भारतीय सामाजिक संरचना स्थिरता से गतिशीलता की ओर अग्रसर हो रही है। इसमे जो रूढवादिता थी वो समाप्त होने को है। उसके स्थान पर तर्कवाद आ गया है। अनेक समाजशास्त्रियों ने सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन किया है। इन लोगों ने भारतीय समाज के संरचनात्मक पहलुओ पर अधिक ध्यान दिया है जैसे बहुत से अध्ययन जाति, विवाह, परिवार इत्यादि पर हमें मिलते हैं।